RUSSIA WORKSHOP – JULY 2019

Kabir session 1: yogic language

J = MS3190 = Jaipur manuscript, 1615-21
S = Jaipur ms number as given in Callewaert's *Millennium Kabir*, followed by # = *Millennium* poem number

J12 – S12#16

अवधू गगन मंडल घर कीजै रे ॥
अंम्रित झरै सदा सुष उपजै ॥ बंक नालि रस पीजै ॥टेक॥
मूल साधि[1] सर गगन समांनां ॥ सुष्मन पोतन[2] लागी ॥
कांम क्रोध दोउ कीया[3] बलीता ॥ तहां जोगनी जागी ॥१॥
मनवां जाइ दरीबै[4] बैठा ॥ मंगंन भया रसि लागा ॥
कहै कबीर जिय संसा नांही ॥ सबद अनाहद बागा ॥२॥१२॥

J6 – S6#7

नरहरि सहजैं[5] जिनि[6] जांनां ॥
गत फल फूल तत तर पलव ॥ अंकूर बीज समांणां ॥टेक॥
प्रगटि प्रकास ग्यांन गुर गंमि तैं[7] ॥ ब्रह्म अग्नि प्रजारी ॥
ससिहर सूर दूर दूरंतर[8] ॥ लागी जोग जुग ताली[9] रे ॥१॥
उलटे पवन चक्र षट बेधे ॥ मेरडंड सर पूरा ॥
गंगन गरजि मन सूंनि समांणा ॥ बाजे अनहद तूरा ॥२॥[10]
सुमति सरीर कबीर[11] बिचारी ॥ त्रिकुटी संगम स्वांमी ॥
पद आंनंद काल तैं छूटै ॥ सुष मैं सुरति संमांणी ॥३॥६॥

---

[1] Gop21;13, *KG* (Gupta), p. 186, *KV-S*, p. 36 बांधि.
[2] *KV-S*, p. 36 यों तन.
[3] V133, *KG* (Gupta), p. 186, *KV-S*, p. 36 भया. Gop21;13 भये.
[4] *KV-S*, p. 36 दरीचै.
[5] A6, C9, Raj72;3 सहजैं ही.
[6] C9 यिन.
[7] Raj72;3 तौं.
[8] Raj72;3 दुरिअंतरि.
[9] C9, Raj72;3 तारी.
[10] In Raj72;3 inverted sequence of verses 1 and 2.
[11] Raj72;3 कबीर सरीर.

J8 – S8#10

अवधू ग्यांन लहरि करि[12] मांडी ॥
सबद अतीत अनाहदि राता ॥ इहि बिधि त्रिस्नां षांडी ॥टेक॥
बन कै सुसै[13] संमदि घर कीया ॥ मछा बसै पहाड़ी ॥
सुद्र[14] पीवै बांभण मतिवाला ॥ फल लागा बिन बाड़ी ॥१॥
षाड[15] बुणै कोली मै बैठी ॥ भौइ घूंटै[16] मैं गाडी ॥
तांणैं बांणैं पड़ी अनवासी ॥ सूत कहै बुणी[17] गाढी ॥२॥[18]
कहै कबीर सुनहु रे संतौ ॥ अगंम ग्यांन पद मांही ॥
गुर प्रसादि सुई कै नाकै ॥ हस्ती आंवहि जांहीं ॥३॥८॥

J13 – S13#17

अवधू जोगी जग थैं न्यारा ॥
मुद्रा त्रिति सुरति करि सींगी ॥ नाद न षंडै धारा ॥टेक॥
बसै गगन मै दुनी न देषै ॥ चेतनि चौकी बैठा ॥
चढि आकासि आसंन नहीं छाडै ॥ पीवै महारस मींठा ॥१॥
प्रगट कंथा ⟨गुपत अधारी⟩[19] दिल मैं द्रपण जोवै[20] ॥
सहंस अनेक छतीसौं[21] धागा ॥ निहिचै[22] नाकै पोवै ॥२॥
ब्रह्म अग्नि मैं काया जारै ॥ त्रिकुटी संगम जागै ॥
कहै कबीर सोई जोगेस्वर ॥ सहज सुंनिं ल्यौ लागै ॥३॥१३॥

---

[12] V9, घूंनिं, C12, *KV-S* घुनि.

[13] *KG* (Gupta), *KV-S* ससै.

[14] *KV-S* सुइ.

[15] *KV-S* थान.

[16] V9 भुइ घूंटा, A9, C12 भैं घूटा, *KG* (Gupta) भ्वैं खूंटा, *KV-S* मैं खूँटा.

[17] V9 बूणि, A9 बुंनि, *KG* (Gupta) बुणि, C12, *KV-S* बुनि.

[18] V9 and C12 insert one more verse, the first half of which is common to both: मुसौ तपै बिलाइ सेवै । स्याल सिघ कूं षाई । In V9 the second half reads: ऐक अचंभा अैसा हूंवा । मडा काल कूं षाई ॥ C12 has different reading: येक अचंभौ देष्यो रै साधो । अगन्य जलै जल माहीं ॥

[19] The place where these two missing words belong is marked by two *kākapāda*s. गुपत अधारी was written by diffferent hand at the bottom of the page. A15, *KG* (Gupta) and *KV-S* instead of गुपत अधारी read मांहै जोगी.

[20] A15 द्रपन मैं दिल जोवै.

[21] A15 छसै सहंस इकीसौ धागा; *KG* (Gupta) and *KV-S* सहँस इकीस छ सै धागा.

[22] A15 निहचै; *KG* (Gupta) and *KV-S* निहचल.

J28 – S28#34

संतौ धागा तूटा गगन बिनसिगा[23] ॥ सबद जु कहां समाई ॥
य़हु संसा मोहि निस दिन ब्यापै ॥ कोई न कहै समझाई ॥टेक॥
नही ब्रह्मंड प्यंड भी नांही । पंच तत भी नांहीं ॥
अला पिंगुला सुषमन नांहीं ॥ ऐ गुन कहां समांहीं ॥१॥
नही ग्रिह द्वार कछू नही तहुवां ॥ रचनहार पुनि नाहीं ॥
जोव़नहार[24] अतीत सदा संगि ॥ ऐ गुंन तहां समांहीं ॥२॥
तूटै बधै[25] बधै पुनि तूटै । जब तब होइ बिनासा ॥
तब को ठाकुर इब[26] को सेव़ग ॥ को का कै व़िसव़ासा ॥३॥
कहै कबीर य़हु गगन[27] बिनसै ॥ जौ धागा उनमांनं[28]
सीष्यें सुणें पढें का होई ॥ जे[29] नहीं पदहि समानं ॥४॥२८॥

---

[23] MS3190 बिनसिगा, *MKV*, p. 153, wrongly बिनसि गया, perhaps under the influence of all other MSS included in that edition that contain this variant reading.

[24] All Rājasthānī MSS have either जोवनहार, जोवनहाडा or जोवणहार, word of unclear meaning, differently interpreted by different translators and lexicographers. Explanations include: जोवनहार = ढूंढने वाला, जिज्ञासु with the present locus as an example, in CATURVEDĪ and MAHENDRA, *KK*, p. 154; जोवनहार = साक्षि-चैतन्य, again exemplified by quotation of the present verse, in SĪHA, *KKK*, p. 111. Both interpretations are supported by dictionaries: *HŚS*, vol. 4, p. 1805, has जोवना as verb with meanings १. जोहना । देखना । तकना । २. ढूंढना । तलाश करना । ३. आसरा देखना । रास्ता देखना । LĀLASA's *RHSŚ*, vol. 1, p. 488, has जोवण, *f.*, with first meaning देखने की क्रिया या भाव । *MHK*, vol. 2, p. 390, includes, apart from the verb जोवना – ध्यानपूर्वक देखना, also the noun जोवण, *m.*, as a variant of the noun यौवन „youth". SĪHA, *KV-S*, p. 375, in his translation, or rather free interpretation of this line explicates the meaning given in his above-mentioned dictionary: ये सारे पदार्थ उस साक्षि-चैतन्य में लीन हो जाते हैं जो इन सब से अतीत और शाश्वत है । वही परमतत्व इनका आदि भी है और अवसान भी है । सांसारिक पदार्थ नश्वर है । GUPTA, *KG*, p. 165, has more literal translation: केवल संसार से अतीत (निर्लिप्त) जोवनहार (संयोजन करने वाला) निरन्तर संग होगा, तब ये गुण वहां (उसी में) समाएंगे । TIVĀRĪ, *KG*, p. 67, accepts different readings of the word as well as of the whole line. He himself gives preference to a variant found in AG 334;52;2: जोड़णहारो सदा अतीता इह कहीअै किसु मांहीं („The Joiner is forever unattached; now, within whom is the soul said to be contained?", in the translation of *SGGS*, 1433), and adds the following note: दा. नि. स. [MSS read:] जोवनहार अतीत सदा संगि ए गुण तहां समांहीं । [पद में आरंभ से ही प्रश्नों की श्रृंखला चल रही है जो आगे की द्वपदी में समाप्त होती है । दा. नि. स. की यह पंक्ति, जो चौथी पंक्ति का उत्तर ज्ञात होती है, प्रश्नों की इस स्वाभाविक श्रृंखला को तोड़ देती है, अतः अस्वीकृत ।] CATURVEDĪ and MAHENDRA, *KK*, p. 153, include the word as it occurs in this variant reading too; for them, जोड़नहारो = जोड़ने वाला.

[25] Variants: A34 वंधै; C19 बंधै; J105 जूरै; Raj67;1, AG334;52 जुडै. SĪHA, *KKK*, p. 204, explains the form बधै as बढ़ता है. CATURVEDĪ and MAHENDRA, *KK*, p. 292-292, recognize the word as homonymous with meanings 1. मारे डाल रही है, and 2. बढ़ता है (the first meaning is exemplified by quotation from *sākhī* 12.40 of the Śyāmasundaradāsa ed.: काँची कारी जिनि करै, दिन दिन बधै बियाधि । However, in this particular instance too, the proper meaning well may be „to grow", as understood e.g. by GUPTA, *KG*, p. 44-45).

[26] MS3190/S28, Gop83;1 इब; C19 ईब; A34 अव; V27, Raj67;1 अब.

[27] Of all MSS published inthe *MKV*, only Raj67;1 inserts negative particle न after गगन. On the other hand, Gupta's *KG* and Sīha's *KV-S* include this negative particle न without any mention of this being a *varia lectio*.

[28] Apart from MS3190/S28 उनमांनं also in Raj67;1; A34 उंनमांनां; C19 ऊनमांनं; V27 ऊंनमांनां; This word has been variously undestood as a noun or as a verb; thus CATURVEDĪ and MAHENDRA, *KK*, p. 39: उनमांनां – क्रि[या] स[कर्मक] (हि० उनमान से उनमानना) – सोचा है, अनुमान किया है । उ[दाहरण] जौ धागा उनमांनां । (प[द] ३२-९). SĪHA, *KKK*, p. 30, on the other hand, explains उनमांनां – वि[शेषण] (हि० उनमान) उन्मनी अवस्था में । ~ कहै कबीर यहु गगन न बिनसै जौ धागा उनमांनां । पद २९८-९ । Simha's free translation *cum* commentary is consistent with his lexical explanation: पद के प्रारंभ में उठाई गई शंका का समाधान करते हुए कबीर कहते हैं कि यदि ध्यान-सूत्र उन्मनी में स्थिर हो जाये तो चित्त का संबंध सारशब्द से हो जाएगा और तब पता चलेगा कि एक ऐसी अवस्था है, जहां शब्द शाश्वत है । GUPTA, *KG*, p. 165, too understands the word as a noun that denotes a peculiar state of mind: कबीर कहता है, यह आकाश नहीं विनष्ट होता है, यदि उन्मन (मन को इन्द्रियों से हटा कर उसे उत्थित करने की प्रक्रिया) का धागा (सूत्र) [लगा हुआ] हो । Here, *HŚS* vol. 2, p. 594, may be of some interest: उन्मनी – संज्ञा सत्री[लिंग] (सं[सकृत]) खेचरी, भूचरी आदि हठयोग की पाँच मुद्राओं में से एक । इसमें दृष्टि को नाक की नोक पर गड़ाते हैं और भौं को ऊपर चढ़ाते हैं ।

[29] Variants: MS3190/S28, A34, V27 जे; Raj67;1 जै; C19 जो; Gop83;1 जौ. Sīha in *KV-S* and Gupta in *KG* जौ without variants.

J7 – S7#8

मन रे मनहीं उलटि समांनां ॥
गुर प्रसादि अकलि भई तो कूं ॥ नहीं तर था बेगांनां ॥टेक॥
उलटे पवन चक्र षट बेधे ॥ सहजि सूंनि अनरागी[30] ॥
आवै न जाइ मरै नहीं जीवै ॥ ताहि षोजि बैरागी ॥१॥
नेड़ै तैं दूरि दूरि तैं नेड़ै । जिनि जैसा करि जांण्यां ॥
औलौती का चढ्या बलींडै[31] ॥ जिनि पीय़ा तिनि मांनां ॥२॥
अनभै कथा कवन स्यूं कहिय़े ॥ है को चतुर बमेकी ॥
कहै कबीर गुरि[32] दीय़ा पलीता ॥ सो झल बिरलै देषी ॥३॥७॥

[prepare only to here]

* * * * *

Note from LH: Jaroslav presented this poem in Bansko 2014. It is difficult, often opaque to me. I include it in the handout in case anyone would like to work on it with me. I need help on translation!

J49 – S50#63

हींडोलणां जहां[33] झूलै[34] आतम राम ।
प्रेम भगति हीडोलनां ॥ सब संतनि कौ बिश्रांम । टेक ॥
चंद सूर दोइ षंभवा रे[35] । बंक नालि की डोरि ॥
झूलै पंच पिय़ारीय़ां ॥ तहां झूलै जिय़ मोर ॥१॥
द्वादस गंमि कै अंतरा[36] ॥ तहां अंम्रित कौ बास[37] ॥
जिनि य़हु अंम्रित चाषिय़ा ॥ सो ठाकुर हंम दास ॥२॥
सहज सुंनि कौ नेहरौ ॥ गगन मंडल सिरिमौर ॥
दोउ कुल हंम आगली ॥ जे हंम झूलैंहि[38] हींडोल ॥३॥
अरध उरध की गंगा जमंना ॥ मूल कवल कौ घाट ॥
षट चक्र की गागरी । त्रिबेणी संगम बाट ।४।
नाद बिंद की नांवरी । रांम नांम कणिहार ॥
कहै कबीर गुंन गाइ लै ॥ गुर गंमि उतरौ पार ॥५॥४९॥[39]

---

[30] A7 सहज सुंनि अनरागी; V7 सुनि सुरति लै लागी; J92 सहज सूंनि ल्यौ लागी; C10 सुनि सुरति ल्यो लागी; AG333;47 सुरति सुंनि अनरागी; Tivārī, *KG*, p. 80 सुरति सुन्नि अनुरागी. In the present reading (and also A7) the adjective अनरागी is to be construed as the attribute to the noun in the ergative case पवन.

[31] A7, V7, J92, C10 have only formal variants of the present reading; AG333;47 अलउती का जैसे भइआ बरेडा. Gupta, *KG*, p. 147, translates: [विपरीत-करणी मुद्रा द्वारा] औलौती (छाजन का वह छोर जहां से उसका पानी गिरता है) का [जल] बड़ेरे (वह बल्ली जिस पर से छाजन नीचे की ओर डाली जाती है) पर चढ़ गया; तब उस दिव्य जल को जिसने पिया, वही उसको मान गया ।

[32] Only MS3190/S7 and A7 have गुरि; V7, J92, C10, and also the editions of Gupta and Tivārī read गुर; AG333;47 has different version: जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी. In the translation of *SGGS*, p. 1428: „as is the fuse which you apply, so is the flash you will see.“

[33] V15 omits the pronoun; Gop75;26, *KV-S*, *KG*(Gupta) तहाँ.

[34] Gop75;26 झूलैंहि.

[35] Gop75;26, *KV-S*, *KG*(Gupta) omit रे.

[36] A22, V15, Gop75;26 अंतरा रे.

[37] A22, V15 गास, *KV-S*, *KG*(Gupta) ग्रास; Gop75;26 सास.

[38] Gop75;26 झूलै, A22, V15, *KV-S* झूलैं, *KG*(Gupta) झूलहिं.

[39] In MS3190 the number of the *pad* is erroneously given as 49.